

बजिली-अधशेष राष्ट्र बनने से चूका भारत

चर्चा में क्यों?

भारत एक बार फिर बहुत ही कम अंतर से बजिली-अधशेष राष्ट्र (Power Surplus Nation) बनने से चूक गया।

प्रमुख बिंदु

- वर्ष 2018-19 में पीक पॉवर डेफिसिट (Peak Power Deficit) 0.8 फीसदी और कुल ऊर्जा घाटा 0.6 फीसदी रहने के कारण भारत ने बजिली-अधशेष राष्ट्र बनने का मौका गँवा दिया।
- केंद्रीय वदियुत प्राधिकरण (Central Electricity Authority- CEA) ने 2018-19 के लिये अपनी 'लोड जेनरेशन बैलेंसिंग रिपोर्ट' (Load Generation Balancing Report- LGBR) में क्रमशः कुल ऊर्जा और पीक पॉवर के आँकड़ों में 4.6 प्रतिशत और 2.5 प्रतिशत की वृद्धि की संभावना व्यक्त की थी। इससे यह संकेत मलि रहा था कि इस वित्तीय वर्ष में भारत एक बजिली-अधशेष देश होगा।
- CEA ने वर्ष 2017 में भी अपने 'लोड जेनरेशन बैलेंसिंग रिपोर्ट' में अनुमान लगाया था कि भारत 2017-18 में एक शक्ति-अधशेष राष्ट्र बन जाएगा।
- लेकिन 2017-18 में भी पीक पॉवर डेफिसिट 2.1 प्रतिशत और पूरे देश में कुल बजिली घाटा 0.7 प्रतिशत था।
- CEA के नवीनतम आँकड़ों के अनुसार, 2018-19 में पीक आवर्स के दौरान 177.02 गीगावॉट मांग के मुकाबले 175.52 गीगावॉट (जीडब्ल्यू) की आपूर्ति की गई थी जिस कारण 1.49 गीगावॉट या 0.8 प्रतिशत की कमी रह गई।
- आँकड़ों से पता चलता है कि 2018-19 के दौरान 1,274.56 बिलियन यूनिट्स (बीयू) की मांग के मुकाबले 1,267.29 बिलियन यूनिट्स बजिली की आपूर्ति की गई, जिससे 7.35 बिलियन यूनिट्स या 0.6 प्रतिशत की कुल बजिली या ऊर्जा की कमी हुई।
- मार्च में 108.66 बीयू की मांग के मुकाबले 108.19 बीयू बजिली की आपूर्ति की गई थी। अतः मार्च 2019 के दौरान कुल ऊर्जा घाटा 0.4 प्रतिशत था।
- वशिष्टजों का कहना है कि यह स्थिति बजिली खरीदने में डिस्को के अक्षम नहीं होने के कारण है। इस साल जनवरी तक उनका कुल बकाया 40,698 करोड़ रुपए था।
- भारत एक शक्ति-अधशेष राज्य हो सकता है क्योंकि इसकी स्थापित बजिली उत्पादन क्षमता लगभग 177 गीगावॉट की मांग के मुकाबले 356 गीगावॉट है।
- बजिली उत्पादन को दोगुना किया जा सकता है बशर्ते वितरण कंपनियाँ (डिस्को) अपने बकाए का भुगतान शीघ्र करें।

पीक पॉवर डेफिसिट (Peak Power Deficit)

- पीक डिमंड, पीक लोड या ऑन-पीक ऊर्जा क्षेत्र में उपयोग की जाने वाली शब्दावली है।
- यह एक ऐसी अवधि को दर्शाती है जिसमें औसत आपूर्ति स्तर की तुलना में अधिक एवं नरितर बजिली प्रदान करने की उम्मीद की जाती है।
- इसी अवधि में ऊर्जा मांग की तुलना में ऊर्जा आपूर्ति की कमी पीक पॉवर डेफिसिट कहलाती है।

स्रोत: द इंडियन एक्सप्रेस